सं भ्रो.वि./एफ.डी./84-84/27654.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राये है कि मै० सुरमीर टैक्सटाईल प्रा० लि० 78, डी॰एल॰एफ॰ फरीदाबाद, के श्रिमिक भी योगेन्द्र सभी तथा उनके प्रवन्त्रकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई भ्रोद्योगिक विवाद हैं;

धौर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं;

इस लिए, अब, औद्योगिक विवाद अधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (गृ) द्वारा प्रदान की गई किसकों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी अधिसूचना सं 5415-3-श्रम-66/15254, दिनांक 20 जून, 1968 के साथ पढ़ते हुए अधिसूचना सं 11495-जी-श्रम-57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उनके अधिनियम की धारा 7 के अधीन गठित श्रम न्यायालय, फरीदाबाद, को विवादप्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला क्यायनिर्धय के लिए निर्देश्ट करते हैं जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादप्रस्त मामला है या विवाद से वृक्षंगत अथवा सम्बन्धित मामला है:—

क्या श्री योगेन्द्र शर्मा की सेवाग्रों का समापन न्यायोचित तथा ठीत है ? यदि नहीं, तो वह निस राहत का हजदार है ?

हं थो.वि./एफ..डी./82-84/27667.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं कि फिल इण्डिया लि॰ 13/3, मथुरा रोड़, फरीदाबाद, के अमिक श्री राम रत्न शर्मा तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई श्रीकोणिक विवाद है;

भीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्विष्ट करना बांधनीय समझते हैं;

इसलिए, ग्रव, ग्रीबोगिक विवाद ग्रिविनियम, 1947, की घारा 10 को उपवारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए, ब्रियाणा के राज्यपाल इस के द्वारा सरकारी ग्रीविस्त्वता सं० 5415-3-श्रम-68/15254, दिनांक 20 जून, 1968 के साथ पढ़ते हुए ग्रीविस्त्वता सं० 11495-जी-श्रम-57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उक्त प्रधिनियम की धारा 7 के ग्रीवीन गठित श्रम न्यायालय, करीदाबाद, को विवाद बस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय के लिए निर्विष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रवन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवाद ग्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत अपना सम्बन्धित मामला है:—

क्या श्री राम रत्न शर्मा की सेवाओं का समापन न्यायोजित तथा ठीक है? यदि नहीं, तो वह किस राष्ट्रत का हुकबार है। सं श्री.वि. |गृड़गांवा | 79-84 | 27674. — चूंकि हरियाणा के राज्याल की राय है कि मैं पिल एस वो इण्डस्ट्रीज प्राल् लि खाण्डसा रोड़, गृड़गांवा, के श्रीमक श्री राजेन्द्र विशष्ठ तथा उसके प्रवन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई श्रीकोगिक विवाद है;

और जुंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना बांछनीय समझते हैं ;

इसलिए, ग्रव, ग्रीबोगिक विवाद प्रधिनिषम, 1947, की घारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड ,(ग) द्वारा प्रदान की गई शिक्तायों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी प्रधिनुवना सं. 5415-3-अम-68/15254, दिनांक 20 जून, 1968 के साथ पढ़ते हुए प्रधिसूचना सं. 11495-जी-अम/57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उक्त प्रधिनिषम की धारा 7 के ग्रधीन गठित अम न्यायालय, परीदाबाद, को विवादग्रस्त या उससे मुसंगत या उससे संविद्यत नीचे लिखा मामला व्यायनिर्णय के लिए निर्दिष्ट करते हैं जीकि उक्त प्रवन्धकों तथा अभिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से मुसंगत व्याया सम्बन्धित मामला है:—

क्या भी राजेन्द्र विशव्ठ की सेवामों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ? दिनांक 2 जुलाई, 1984

्सं. ग्रो. वि./एफ.डी./53-84/26105. चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राये है कि मैं. सिराको ग्राटो प्रा, लि. प्लाट नं. 69, सैक्टर-6, फरीदाबाद के श्रमिक श्री जमन सिंह तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई ग्रीद्योगिक विवाद ♥ है;

ग्रीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना बांछनीय समझते हैं ;

इसलिए, अब, श्रौद्योगिक विवाद श्रधिनियम, 1947 की घारा 10 की उप घारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी श्रधिसूचना सं. 5415-3-श्रम-68/15254, दिनांक 20 जून,

1968 के साथ पढ़ते हुए प्रधिसुधना सं. 11495-जी-श्रम/57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उनत प्रधिनियम की धारा 7 के प्रधीन गठित श्रम न्यायालय, फरीदाबाद को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे संबंधित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय के लिए निर्दिष्ट करते हैं, जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत श्रथवा संबंधित मामला है,

क्या श्री जमन सिंह की सेवाओं का समापन न्यायोचित तथा ठीक है? यदि नहीं, तो वह निस राहत का इकदार है?

सं.श्रो.वि/एफ.डी./123-84/26112--चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राये है कि मैं. श्राटोलेंग्पस लि., 21, इण्डस्ट्रीयल एरिया एन. श्राई. टी., फरीदाबाद के श्रमिक श्री श्रजीत कुमार तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद विखित मामले में कोई श्रीधीयिक विवाद है;

भ्रीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निदिष्ट करना वांछनीय समझते हैं;

इसलिए, ग्रव, ग्रीद्योगिक विवाद श्रिधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शिक्तयों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी अधिसूचना सं. 5415-3-श्रम-68/15254, दिनांक 20 जूनं, 1968 के साथ पढ़ते हुए श्रिधिसूचना सं. 11495-जी-श्रम/57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उवत श्रिधिनियम की धारा 7 के श्रिधीन गठित श्रम न्यायालय, फरीदाबाद को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे संबन्धित नीचे लिखा मामला न्यायिन ये के लिए लिए निदिष्ट करते हैं, जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवाद ग्रस्त मामला है या विवाद सुसंगत ग्रथवा संबंधित मामला है:—

क्या श्री अजीत कुमार की सेवांश्रों का समापन न्यायोवित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

दिनांक, 26 जुलाई, 1984

सं. ग्रो. वि/यमुना/42-84/26376. —चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राये हैं कि मैं। लाम्बा इन्टरप्राईजिज पटरी मोहल्ला, जगाधरी के श्रीमक श्री सीता राम तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई ग्रौद्योगिक विवाद है :—

ग्रौर चुंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं ;

इसलिए, ग्रब, ग्रौद्योगिक विवाद ग्रिधिनियम, 1947 की घारा 10 की उप घारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी ग्रिधिसूचना सं. 3 (44) 84-3-श्रम, दिनांक 19 ग्रप्रैंल, 1984 द्वारा मामला उक्त ग्रिधिनियम की घारा 7 के ग्रधीन गठित श्रम न्यायालय ग्रम्बाला को विवादग्रस्त या उससे संबंधित नीचे लिखा मामला न्यायिनिर्णय के लिए निर्दिष्ट करते हैं, जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिकों के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से मुसंगत ग्रथवा संबंधित मामला है:—

क्या श्री सीताराम की सेवाग्रों का समापन न्यायवित तथा ठीक है? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है?

सं. ग्रो. वि/पानीपत/44-84/26382. — चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राये है कि मैं. दी पानीपत कोपरेटिव शूगर मिल लि., पानीपत केश्रमिक श्री इन्द्रजीत तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई ग्रीद्योगिक विवाद है ?

ि ग्रीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को त्यायिन र्णय हेत् निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं :;

इसलिए, अब, श्रौद्योगिक विवाद श्रिधिनियम 1947 की घारा 10 की उप धारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई गिरित्यों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राण्यपाल इसके द्वारा सरकारी श्रिधिसूचना सं. 3(44)84-3-श्रम, दिनांक 19 श्रप्रैल, 1984 द्वारा उक्त श्रिधिनियम की धारा 7 के श्रधीन गठित श्रम न्यायालय श्रम्बाला को विवादाग्रस्टत या उससे संबंधित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय के लिए निर्दिष्ट करते हैं, जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिकों के बीच या तो विवादाग्रस्त मामला है या दिवाद से सुसंगत श्रमवा संबंधिधत मामला है:—

क्या श्री इन्द्रजीत की सेवाओं का समापन न्यायोवित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है।